Peer Reviewed/ Refereed Journal

ISSN -PRINT-2231-3613ONLINE2455-8729
International Educational Journal
CHETANA
Impact Factor SJIF=4.157

Received on 18thJuly 2018, Revised on 19th July 2018; Accepted 28th July 2018

आलेख

प्रभावी शिक्षा के संवर्द्धन में शिक्षक की भूमिका

* डा. सुरेन्द्र पाल रॉयल
प्रधानाचार्य, रा. उ. मा. विद्यालय मानकसर, हनुमानगढ़
मो. 9414481394, *ईमेल:* royal.sangaria29@gmail.com

Key words: *मिशन–विद्या, गुजरात आदि.*

लेख–संक्षेप

किसी भी राष्ट्र का आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक विकास उस देश की शिक्षा पर निर्भर करता है। शिक्षा हमें ज्ञान, विनम्रता, व्यवहार कुशलता और योग्यता प्रदान करती है। किसी भी देश या राष्ट्र के विकास में एक शिक्षक द्वारा अपने शिक्षार्थी को दी गयी शिक्षा और शैक्षिक विकास की भूमिका का अत्यन्त महत्व है। अध्यापक द्वारा दी गयी शिक्षा ही शिक्षार्थी के सर्वांगीण विकास का मूल आधार है। एक शिक्षक द्वारा अपने विद्यार्थी को स्कूल में जो सिखाया जाता हैं या जैसा वो सीखता है वे वैसा ही व्यवहार करते हैं। इसलिए एक शिक्षक ही अपने विद्यार्थी को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है। सफल जीवन के लिए शिक्षा बहुत उपयोगी है जो हमें शिक्षक द्वारा प्रदान की जाती है। आधुनिक युग में शिक्षक की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। शिक्षक वह पथ प्रदर्शक होता है जो हमें किताबी ज्ञान ही नहीं बल्कि जीवन जीने की कला भी सिखाता है। राष्ट्रीय विकास के लिए मानवीय संसाधन को उपयोगी बनाने में अध्यापकों की अहम् भूमिका है। कक्षागत् क्रियाकलापों के लिये अध्यापक अनेक शिक्षण युक्ति एवं विधियाँ प्रयोग करता है। सीखने की प्रक्रिया में शिक्षक केंद्रीय भूमिका में होते हैं। शिक्षा को ही किसी देश का मेरुदंड कहा जा सकता है। इसी आधारशिला पर उसकी उन्नति व अवनति निर्भर रहती है।

प्रमुख शब्द– शिक्षा, शिक्षक, राष्ट्रीय विकास, विद्यालय।

विषय प्रवेश

भारतीय समाज में शिक्षक को संस्कृति का आधार–स्तम्भ माना गया है। उसे राष्ट्र व बालक के भविष्य का निर्माता कहा गया है। राष्ट्र के लिए समर्पित, ऊर्जावान व सुसंस्कारित नागरिक तैयार करना अध्यापक का दायित्व हैं। देश को समृद्धिशाली, आत्मनिर्भर व विकसित राष्ट्रों की श्रेणी मे तभी लाया जा सकता हैं जब देश का प्रत्येक नागरिक अपनी सामर्थ्य व क्षमता के अनुरूप ईमानदारी से अपने कर्त्तव्य का निर्वाह करें। वर्तमान में हमारे देश में भ्रष्टाचार व असंतोष ने गहराई से जड़े जमा रखी हैं और भ्रष्टाचार की इन जड़ों को उखाड़ना कहने में तो आसान हैं लेकिन व्यवहारिक रूप से इतना आसान नहीं लग रहा है। इस व्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन करने में अध्यापक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। जिस प्रकार की शिक्षा प्रणाली होगी, वैसे ही नागरिक तैयार होंगे और वे नागरिक समाज में वैसी ही शिक्षा चेतना लाएंगे। प्रारंम्भिक शिक्षा के क्षेत्र में योजनाओं की क्रियान्वित के ढंग को भी इसके लिए उत्तरदायी माना जा सकता है। सम्पूर्ण साक्षरता अभियान के परिणामस्वरूप जो सामुदायिक जागृति आई है, और विकेंद्रीकरण की जिस आवश्यकता को

सबने स्वीकार किया है, उससे इस सामूहिक प्रयास और कार्य के लिए निश्चित रूप से एक अनुकूल वातावरण तैयार हुआ है। प्राथमिक शिक्षा में जब तक यथोचित गुणवत्ता और प्रासंगिकता लाने की बात सुनिश्चित नहीं की जाएगी, शिक्षण प्रक्रिया को जब तक सोद्देश्य नहीं बनाया जाएगा और जब तक निर्णय क्षमता व रचनाशीलता के मुद्दे पर गौर नहीं किया जाएगा तब तक हमारे लिए वांछित स्तर तक पंहुचना संभव नहीं होगा।

शिक्षा की आवश्यकता

शिक्षक समाज में उच्च आदर्श स्थापित करने वाला व्यक्तित्व होता है। किसी भी देश या समाज के निर्माण में शिक्षा की अहम् भूमिका होती है। वर्तमान समय में शिक्षा के स्तर का ग्राफ उठने की अपेक्षा गिरता जा रहा है। शिक्षा में हो रहे ह्रास के लिए किसी एक को दोषी ठहराना जायज नहीं होगा। सन् 1970 तक शिक्षण संस्थानों की संख्या कम थी और शिक्षा के स्तर में भी कोई खास गिरावट नहीं आई थी लेकिन 1980 के बाद राजस्थान ही नहीं पूरे देश में शिक्षण संस्थानों की संख्या में खूब इजाफा हुआ और कुकरमुत्ते की तरह बिना कोई मापदण्ड के वृद्धि हुई, जिसका परिणाम यह हुआ कि जिन पवित्र उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए संस्थानों को कार्य करना था उनको गौण कर दिया और धन कमाने की फैक्ट्री अधिक समझने लग गये। वर्तमान में न तो अधिकतर शिक्षक अपना दायित्व ईमानदारी से निभा रहे हैं और न ही शिक्षण संस्थान अपना कार्य प्रभावी ढंग से कर रहे हैं। जहां प्रत्येक विषय का ज्ञान सात वर्ष में दुगुना हो जाता है वहां पाठ्यक्रम में भी कोई विशेष नवीनता नहीं आई है और ज्यादातर अध्यापन नवीन शिक्षण विधियों की अपेक्षा परंपरागत विधियों से हो रहा है। नवीन शिक्षा तकनीक का बहुत कम प्रयोग किया जा रहा है। आजादी के 7 दशक से भी अधिक समय बीत जाने के बाद भी राजस्थान में लाखों बच्चें प्राथमिक कक्षाओं में नहीं पढ़ने आ रहे हैं। वर्तमान में हमारी एक सौ तीस करोड़ जनसंख्या की लगभग तीन चौथाई ही साक्षर हो सकी है जबकि हमें 70 से अधिक वर्ष स्वतंत्र हुए बीत गये हैं। इस समय हमें जनता को शिक्षित करने की आवश्यकता है लेकिन हमारी गाड़ी अभी निरक्षरता के दलदल से भी नही निकल पाई है। अतः वर्तमान में हमें मात्रात्मक व गुणात्मक दोनों स्तर की शिक्षा में साथ–साथ वृद्धि करना आवश्यक हो गया है।

शिक्षा के उद्देश्य

अच्छी शिक्षण संस्थाएं छात्रों को उत्तरदायित्व के मध्य सुरक्षात्मक जीवन जीने के अवसर देकर उनके चरित्र एवं व्यक्तित्व का निर्माण करती है। शिक्षण व्यवस्था के प्रमुख उद्देश्यों में से एक रचनात्मकता का निर्माण है। आधुनिक व लोकतांत्रिक समाज को समृद्ध व शक्तिशाली बनाने के लिए गुणात्मक शिक्षा देने के निम्नांकित उद्देश्य है–

1. उत्तरदायित्व की भावना का विकास करना।
2. नवीनतम व तकनीकी आधारित शिक्षा प्रदान करना जो छात्रों के भविष्य निर्माण में सहायक हो।
3. शिक्षा का ध्येय बच्चों का चरित्र निर्माण करना तथा ऐसे मूल्यों को देना, जिससे कि उनकी अधिगम क्षमता में वृद्धि हो।
4. देश की एकता व उन्नति के लिए ऐसी शिक्षा प्रदान करना, जो उत्प्रेरक की भूमिका का निर्वाह करे।
5. छात्रों की व्यवसाय आधारित श्रेष्ठ दक्षताओं को प्रशिक्षण द्वारा उजागर करना, जो रोजगार सुलभ कौशल विकसित कर सके।
6. कार्य संस्कृति का विकास करना, जिससे छात्रों में कर्त्तव्य निर्वाह की भावना का विकास हो सके।

7. आपसी सहयोग, अहिंसा, धर्मनिरपेक्षता, समाजवाद तथा भ्रातृत्व का विकास करना जिससे छात्र एक दूसरे की भावना का आदर करते हुए कार्य करें।

8. मानव व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना, अर्थात शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, भावात्मक व आध्यात्मिक पहलुओं का पूर्ण रूप से विकास करना।

प्रभावी शिक्षा में अध्यापक का योगदान

अध्यापक बालक का रोल मॉडल होता है। और वह न सिर्फ हमें ज्ञान देता है, बल्कि हमारे जीवन को संवारते समय महान सपने और उद्देश्य संजोये होता हैं। शिक्षक की भूमिका उस सीढ़ी जैसी है, जिसके जरिये लोग जीवन की ऊंचाइयों को छूते हैं, लेकिन सीढ़ी वहीं की वहीं रहती है। विद्यालय के भौतिक वातावरण का विद्यार्थियों पर सब तरह का असर पड़ता है। विद्यालय का शैक्षिक वातावरण रूचिकर उत्साह बढ़ाने वाला हो तो विद्यार्थी भी अच्छा कार्य करते है। प्रभावी शिक्षा में शिक्षक का योगदान व उत्तरदायित्व निम्नलिखित प्रकार से है–

1. **सर्वांगीण विकास** – विद्या के द्वारा व्यक्ति का सर्वांगीण विकास होता है। इस चहुँमुखी विकास के लिए व्यक्ति शिक्षा प्राप्त करने के लिए निरन्तर कार्य करता है। जीवन में एक दिशा और लक्ष्य के निर्धारण में विद्या की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। विद्या मनुष्य के अन्दर आत्मविश्वास पैदा करती है। स्वामी विवेकानन्द ने कहा है कि शिक्षा विविध जानकारियों का ढेर नहीं, बल्कि मनुष्य में जो सम्पूर्णता गुप्त रूप से विद्यमान है उसे बाहर लाना ही शिक्षा का मुख्य कार्य है।

2. **शैक्षिक वातावरण का सृजन** – विद्यालय का शैक्षिक वातावरण विद्यार्थी के संज्ञानात्मक व अनुभवात्मक विकास को प्रभावित करता है। शिक्षकों पर बालकों के स्वाभाविक विकास को सुगत व गतिशील बनाने का दायित्व होता है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रमुख लक्ष्यों में से एक लक्ष्य हमारे समाज में स्वावलम्बी, अधिक उत्पादन करने वाले अधिक क्षमतावान व अधिक विचारक नागरिक उत्पन्न करने का है। उपयुक्त शैक्षिक वातावरण का सृजन करना व उसे शैक्षिक अनुभव प्रदान करना तो शिक्षक का ही कार्य है।

3. **राष्ट्रीय आकांक्षाओं की पूर्ति** – शिक्षण का उद्देश्य छात्रों में राष्ट्र निर्माण की क्षमताएं पैदा करना है। शिक्षा संस्कार व सुरूचि का परिमार्जन करती है। प्लेटो के अनुसार शरीर और आत्मा में अधिक से अधिक जितने सौंदर्य और सम्पूर्णता का विकास हो सकता है उसे सम्पन्न करना ही शिक्षा का उद्देश्य है। विद्यार्थी के लिए विद्या सिर्फ धन कमाने का साधन नहीं बल्कि सांस्कृतिक जागरण का वह आधार है जिस पर वह अपने सिद्धान्तों और विचारों की इमारत का निर्माण करता है। शिक्षक के द्वारा ही राष्ट्रीय आकांक्षाओं की पूर्ति होती है। एक पीढ़ी अपनी संज्ञानात्मक, कौशलात्मक एवं भावात्मक धरोहर को दूसरी पीढ़ी तक हस्तान्तरित करती है। अतः शिक्षा आन्तरिक व बाह्य विकास की उपादेय प्रक्रिया है।

4. **शिक्षकों द्वारा अच्छे आचरण की शिक्षा को बढ़ावा देना –** बालक–बालिकाओं में अच्छे आचरण की शिक्षा देने से पूर्व शिक्षकों का सदाचरण होना चाहिए क्योंकि छोटे बच्चे अध्यापक की बातों का अनुकरण करते हैं। वे अभिभावकों की अपेक्षा अध्यापकों का अनुकरण अधिक करते है। अतः शिक्षकों द्वारा बच्चों में अच्छे संस्कारों का विकास करने से अभिभावक भी अपने बच्चों को स्कूल भेजने के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण प्रदर्शित करेंगे।

5. **बालक को सीखने के अवसर –** विद्यालय से जुड़ने वाले प्रत्येक बालक–बालिका को कुछ नया करने का अवसर देना होगा ताकि उसे विद्यालय आने में खुशी एवं आनन्द का अनुभव हो और सीखने में भी रुचि पैदा हो सके। शिक्षा पद्वति ऐसी हो कि शिक्षक व छात्र दोंनो सीखें। शिक्षक पोस्टमैन की तरह नही होना चाहिए कि बन्द बक्से

में से लिफाफे को निकालकर छात्रों की तरफ फेंक दे। दोंनों के बीच अंतः क्रिया होनी चाहिए। इस प्रकार के आनन्दमयी व रुचिपूर्ण शिक्षण में सीखने की सामग्री का प्रयोग एक प्रभावकारी कदम है।

6. **बाल–केन्द्रित शिक्षण** – शिक्षण करते समय अध्यापक को बच्चों के मनोविज्ञान को ध्यान में रखना चाहिए। प्राथमिक स्तर में बच्चों के बस्ते का बोझ भी कम करना चाहिए। अगर छात्र के मन लगाने से अधिगम हो जाता है इसका तात्पर्य शिक्षण रुचिकर है। अतः शिक्षण बालक–बालिकाओं की आयु, स्तर, रुचि एवं आवश्यकता के अनुसार करवाना बालक–केन्द्रित शिक्षण है। बालक–केन्द्रित शिक्षण के लिए आवश्यक साधनों की पर्याप्त मात्रा होगी तभी हम खेल–खेल में रुचिकर शिक्षण प्रदान कर सकते हैं। शिक्षक को आवश्यकतानुसार शिक्षण विधियों में परिवर्तन भी करना चाहिए उसे किसी विशेष विधि तक सीमित होकर कार्य नहीं करना चाहिए।

7. **सतत अभिभावक सम्पर्क** – विद्यालय में अध्यापकों का व्यवहार अच्छा होने के बाद भी बालक–बालिकाएं विद्यालय नहीं पहुँच पाते हैं तो ग्राम शिक्षा समिति के द्वारा अभिभावकों से सम्पर्क कर छात्र के विद्यालय न आने के कारणों को जाना जा सकता है। अध्यापक को छात्र व जन–समुदाय में ऐसी छाप छोड़ने का हरदम प्रयास करना चाहिए जो न केवल प्रशंसनीय हो बल्कि अध्यापक द्वारा किये कार्यो व आचरण का अनुकरण करे।

8. **जन भागीदारी** – शिक्षक अपने मृदु एवं उत्कृष्ट व्यवहार से ग्रामीणों की सोच को विद्यालय विकास में सहयोग के लिए आगे बढ़ा सकते है उन्हे बालक–बालिकाओं की शिक्षा से होने वाले फायदों के बारे में बताना चाहिए जिससे प्राथमिक शिक्षा में मजबूती आ सके। अतः अध्यापकों द्वारा समय–समय पर ढ़ाणी/गाँव में जाकर अभिभावकों से उनकी समस्याओं की जानकारी कर उनके निराकरण में सहयोग दिया जाना चाहिए। अतः शैक्षिक समस्याओं को जन भागीदारी द्वारा आसानी से समाधान किया जा सकता है।

9. **भयमुक्त वातावरण बनाना** – बालक–बालिकाएं अध्यापकों की मार से बचने के लिए नियमित रूप से विद्यालय नही जा पाते है। इसमें सभी अध्यापकों का दोष नही है लेकिन कुछेक अध्यापकों के कारण बालकों के विद्यालय छोड़ने की नौबत आ जाती है। विद्यालय में भयमुक्त वातावरण बनाने के लिए हम अध्यापक बालक को पीटने या डराने के बजाय प्रेम करें तो निश्चित रूप से छात्र असंतोष कम होगा तथा अध्यापक व विद्यालय के प्रति छात्रों का स्वस्थ व सकारात्मक दृष्टिकोण पैदा होगा जिससे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को बढ़ाने में सहायक होंगे।

निष्कर्ष

आज के इस आधुनिक तकनीकी युग में शिक्षक की भूमिका भी बहु आयामी हो गई है। आज शिक्षा के क्षेत्र में वास्तविक सुधार की दृष्टि से शीघ्र सार्थक कदम उठाते हुए हमें ऐसी शिक्षण पद्धति और कार्यक्रम विकसित करने होंगे जो बच्चों के मन में श्रम के प्रति निष्ठा पैदा करें। इसके साथ ही शिक्षक को शिक्षण कार्य, सह शिक्षाकर्मियों, बालक–बालिकाओं, समाज, संस्था व विभागीय अधिकारियों के प्रति उत्तरदायी होना चाहिए और शिक्षा देने वाले व्यक्तियों को संवेदनशील, व्यवहारिक, खुले दिमाग, पूर्वाग्रहों से मुक्त तथा भविष्योन्मुखी होना चाहिए। वर्तमान में देश व समाज की उन्नति हेतु अध्यापक को पहले की अपेक्षा अधिक जवाबदेह होना चाहिए। शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिये केन्द्र एवं राज्यों के बीच सामंजस्य स्थापित करते हुए एकरूपता में संतुलन के माध्यम से ही शिक्षा में गुणवत्ता बहाल करने का प्रयास किया जाना चाहिए।

संदर्भ पुस्तकें

1. शर्मा, प्रभा व नाटाणी, प्रकाश नारायण (2006). *शैक्षिक तकनीकी और कक्षा–कक्ष प्रबंधन*, जयपुरः माया प्रकाशन मंदिर.

2. भारत सरकार (1964–66). *शिक्षा आयोग का प्रतिवेदन*, नई दिल्लीः शिक्षा एवं राष्ट्रीय विकास, शिक्षा मंत्रालय.

3. एन.सी.ई.आर.टी. (2005). *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा,* नई दिल्लीः राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद.

4. भटनागर, सुरेश (1995). *बाल विकास एवं बाल मनोविज्ञान,* मेरठः आर. लाल बुक डिपो.

5. सिंह, जे.डी. व अन्य (2001). *विद्यालय प्रबन्ध व शिक्षा की समस्याएं,* जयपुरः रिसर्च पब्लिकेशन्स.

.....

**** Corresponding Author:***
डा. सुरेन्द्र पाल रॉयल
प्रधानाचार्य, रा. उ. मा. विद्यालय मानकसर, हनुमानगढ़
मो. 9414481394, ईमेलः royal.sangaria29@gmail.com